● **सुनो, समझो और बोलो :**

१४. बिना टिकट

-मेहंद्र सांघी

इस संवाद में राष्ट्रीय संपत्ति का उपयोग ईमानदारी, सच्चाई एवं नियमानुसार करने का संदेश दिया गया है । बिना टिकट यात्रा के परिणामस्वरूप शारीरिक एवं चारित्रिक हानि उठानी पड़ सकती है, यह बताया गया है ।

अध्ययन कौशल

अपने मित्र द्वारा की गई लेखन की गलतियाँ दिखाओ और शब्दकोश की सहायता से सुधार करवाओ ।

(कोई एक रेलवे स्टेशन । प्लेटफार्म पर रेलगाड़ी खड़ी है । गाड़ी निकलने ही वाली है । इतने में फर्नांडिस हाँफता हुआ प्लेटफार्म पर आता है । सामनेवाले डिब्बे की ओर दौड़ता है । गाड़ी निकल चुकी है । जैसे-तैसे वह डिब्बे की पायदान पर खड़ा रहता है ।)

फर्नांडिस : आखिर गाड़ी मिल ही गई ।

रमण : इसमें नया क्या है ? रोज तुम ऐसा ही करते हो ।

श्याम : और नहीं तो क्या ? फर्नांडिस, कभी तो वक्त पर आया करो ।

फर्नांडिस : (दूसरे दरवाजे से टिकट चेकर को आते देख) बाप रे !

श्याम : क्यों ? क्या हुआ ?

फर्नांडिस : ये टिकट चेकर खन्ना कहाँ से आ टपका ?

रमण : यह तो वही बता सकता है!

फर्नांडिस : दोस्तो, अब बाहर झाँकने से कोई फायदा नहीं । गाड़ी की गति तेज हो गई है । इनसे बचने के लिए चलती गाड़ी से कूद भी नहीं सकते ।

श्याम : इसने जरूर हमें चढ़ते हुए देख लिया होगा ।

फर्नांडिस : रमण, लगता है अब तो सुबह का बचाया हुआ किराया भी जुर्माने के साथ भरना पड़ेगा ।

❑ इस संवाद का उचित आरोह-अवरोह के साथ आदर्श वाचन प्रस्तुत करें । प्रश्नोत्तर के माध्यम से पाठ का आशय समझाएँ । विद्यार्थियों से क्रमश: वाचन कराएँ । संवाद का नाट्यीकरण प्रस्तुत करने के लिए मार्गदर्शन करें । प्राप्त सीख अपनाने के लिए प्रेरित करें ।

जरा सोचो तो ... बताओ

अगर तुमको रेलगाड़ी चलाने के लिए मिल जाए तो ....

रमण : (फुसफुसाते हुए) फर्नांडिस, देखो वह तो तुम्हारी ही तरफ आ रहा है!

फर्नांडिस : एक काम करते हैं । अपना चेहरा उदास बनाकर सिर झुकाकर बैठते हैं ताकि कुछ सहानुभूति मिल सके ! (तीनों मुँह लटकाकर बैठते हैं ।)

खन्ना : बच्चो, चलो अपने-अपने टिकट दिखाओ ।

फर्नांडिस : (मरी-सी आवाज में) सर, माफ करें, लगता है कि गाड़ी में चढ़ते समय टिकट जेब से नीचे गिर गए ।

श्याम/रमण : जी हाँ, जी हाँ, मेरा टिकट भी इसके पास था !

खन्ना : बच्चो, सच-सच बताओ, क्या सचमुच तुमने टिकट खरीदे थे और खो दिए हैं ?

फर्नांडिस : जी हाँ! बिलकुल सच है । हम भला झूठ क्यों बोले? वैसे भी हम कभी भी झूठ नहीं बोलते ।

खन्ना : हाँ हाँ! केवल टिकट चेकर को छोड़कर तुम और लोगों से सच ही बोलते होंगे । मगर मेरा अनुभव तो कुछ और ही बताता है!

फर्नांडिस : जी, नहीं सर! हमारे टिकट सचमुच गिर गए हैं ।

खन्ना : ऐसी बात है? तो फिर मैं आज तुम्हें ऐसा सबक सिखाऊँगा कि तुम्हारे टिकट फिर कभी नहीं गिरेंगे । चलो उठो । तीनों उस कोने में बैठ जाओ । उठो!

(तीनों कोने में बैठते हैं । खन्ना जी अन्य यात्रियों के टिकट चेक करने लगते हैं । इतने में राजापुर स्टेशन आता है ।)

फर्नांडिस : दोस्तों, यह हमेशा की तरह इसी स्टेशन पर हमें डाँटकर छोड़ देगा ।

रमण : कहेगा कि अब की बार छोड़ रहा हूँ । अगली बार सख्त सजा दूँगा !

(तीनों मुँह चुराकर हँसते हैं । तीनों उठने लगते हैं ।)

खन्ना : चुपचाप बैठे रहो । हिलो मत । हाँ, अपने पिता का नाम और पता बताओ ।

रमण : सर, प्लीज सर, हमें इस बार माफ कीजिए । कसम से फिर कभी भी ऐसा नहीं करेंगे ।

खन्ना : बिलकुल नहीं । (अन्य यात्रियों से) आप लोग इनपर ध्यान रखिएगा । मैं जरा स्टेशन मास्टर से मिलकर आता हूँ । (खन्ना नीचे उतरते हैं । स्टेशन मास्टर से बात करके वे लौट आते हैं ।)

खन्ना : चलो, उतरो नीचे ।

फर्नांडिस : (आखिरी कोशिश करते हुए) सर, सर प्लीज इस बार...

खन्ना : चुप! चुपचाप मेरे पीछे चलो ।

(तीनों नीचे उतरकर खन्ना के पीछे-पीछे चलने लगते हैं । कुछ दूर जाने के बाद खन्ना जी एक घर के सामने खड़े होते हैं । दरवाजा खटखटाते हैं । दरवाजा खुलता है ।)

खन्ना : बेटे राज, जरा उठोगे?

(राज उठने की कोशिश करता है । उठ नहीं पाता । क्योंकि उसकी दोनों टाँगें हैं हीं नहीं ।)

खन्ना : देखा तुमने कि उसे खड़े होने में कितनी परेशानी हो रही है?

फर्नांडिस : जी हाँ ।

खन्ना : तो क्या तुम भी इसकी तरह अपनी टाँगें तुड़वाना चाहते हो?

तीनो : (एक साथ, घबराहट भरी आवाज में) नहीं! नहीं!!

सदैव ध्यान में रखो

अनुशासन ही जीवन को सफल बनाता है ।

खन्ना : देखो फर्नांडिस, राज की यह ऐसी हालत क्यों हुई कुछ पता है तुम्हें ?
(इतने में अंदर से राज की माँ आती है ।)

माँ : बस बस! बहुत हो चुका खन्ना जी! अब मुझे बोलने दो । बच्चो, मैं राज की माँ । राज जब छोटा था, तब यह भी तुम्हारी ही तरह शैतान था, बिना टिकट सफर करके बहुत खुश होता था । कितनी बार मैंने समझाया! पर इसने माना नहीं । एक बार....एक बार.....

राज : रुको माँ । मैं बताता हूँ । बिना टिकट यात्रा करने में मुझे बड़ा मजा आता था । इससे जो पैसे बचते, उनसे मैं मिठाइयाँ खाता था । एक दिन चेकर जब अचानक डिब्बे में चढ़ा, तो मैं चलती गाड़ी से नीचे कूद पड़ा । सिग्नल और डिब्बे के बीच में फँसकर मैं अपनी दोनों टाँगें खो बैठा !

माँ : अच्छा बच्चो; छोड़ दो ये गंदी आदतें । बैठो आराम से । मैं खाना लगाती हूँ । (अंदर जाती है ।)

खन्ना : देखा तुमने बिना टिकट का परिणाम ?

फर्नांडिस : जी बिलकुल ! अब हम कभी भी ऐसा दुस्साहस नहीं करेंगे ।

खन्ना : शाबाश बच्चो ! मुझे तुमसे यही उम्मीद थी ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द
पायदान = पैर रखने की जगह   जुर्माना = आर्थिक दंड/सजा
दुस्साहस = ऐसा साहस जिससे हानि हो

मुहावरे
मुँह लटकाना = निराश होना
सबक सिखाना = पाठ पढ़ाना

स्वयं अध्ययन

सद्गुणों को आत्मसात करने के लिए क्या करोगे, इसपर आपस में चर्चा करो ।

विचार मंथन

।। ईमानदारी चरित्र निर्माण की नींव है ।।

खोजबीन

रेल इंजन का विकास किस प्रकार हुआ, अंतरजाल की सहायता से लिखो ।

सुनो तो जरा

रेलवे स्थानक पर उद्घोषक द्‌वारा दी जाने वाली सूचनाओं को सुनो और सुनाओ ।

बताओ तो सही

अगर आपका टिकट खो जाए तो आप क्या करोगे, बताओ ।

वाचन जगत से

हरिवंशराय बच्चन की कोई कविता पढ़ो और सुनाओ ।

मेरी कलम से

मित्र को अपनी किसी यात्रा का वर्णन करने वाला पत्र लिखो ।

* कारण बताओ/लिखो ।

१. टिकट चेकर ने बच्चों को सबक सिखाना तय किया था ।
२. तीनों लड़कों को लेकर टिकट चेकर एक घर के सामने खड़े रहे ।
३. बच्चों ने निश्चय किया कि वे अब कभी ऐसा दुस्साहस नहीं करेंगे ।
४. राज अपनी दोनों टाँगें खो बैठा था ।

भाषा की ओर

नीचे दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द शब्दकोश की सहायता से ढूँढ़कर लिखो ।

सूरज	भास्कर
आँख	------
अतिथि	------
फूल	------
पृथ्वी	------
कपड़ा	------
आनन	------
घर	------
सागर	------
चंदा	------